अध्याय – पंचम्

(सारांश, निष्कर्ष, सुझाव एवं शैक्षिक उपयोग)

सारांश

भाषा हमारे चिन्तन का आधार है। किसी भी जनत्रंत्र की सफलता उसके नागरिकों के चिन्तन पर निर्भर करती है। यही कारण है कि किसी भी राष्ट्र के पुनर्निर्माण के कार्य मे भाषा की शिक्षा का अपना विशिष्ट महत्व है। जीवन के प्रति परस्पर अभिव्यक्ति का साधन भाषा ही है। भाषा प्रजातंत्र के मूल्यों का रक्षक है तथा समाज के नवनिर्माण के लिए उत्तरदायी है, क्योंकि भाषा हमारी अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। लेखन की योग्यता प्रत्येक छात्र को देश की समस्याओं से परिचित कराती है। अतः विद्यार्थियो मे लेखन क्षमता का विकास करना भाषा शिक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्‌देश्य है।

प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत ''प्राथमिक स्तर पर छात्र छात्राओं की हिदी में वर्तनी संबंधी त्रुटियों का अध्ययन किया गया। ''

त्रुटियों से तात्पर्य विद्यार्थियों के लेखन के दौरान विभिन्न त्रुटियो मात्रात्मक, बिन्दुगत, विराम चिन्ह, स्वयं सुधार शब्द प्रतिस्थापना, शब्दलोप, पुनरूक्ति शब्दजोड़ना आदि से है।

विद्यार्थियों में लेखन कौशल का विकास करना शिक्षक का महत्वपूर्ण दायित्व है। कक्षा मे कुछ विद्यार्थियों को लेखन के दौरान कोई कठिनाई नहीं होती है। क्यों कि वे धारा प्रवाह मे लिखने मे सक्षम होते है। किन्तु कुछ औसत दर्जे के होते है जिनमे शिक्षक के थोड़े प्रयास से उन्हें लेखन में दक्ष बनाया जा सकता है।

विद्यार्थियों मे लेखनकौशल को विकसित करने एवं लेखन मे होने वाली त्रुटियों को जानने के लिए लेखन परीक्षण आवश्यक है। अतः इस दृष्टि से लेखन एवं त्रुटियों के अध्ययन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। विद्यार्थियों में लेखन करते समय होने वाली त्रुटियों के मुख्य कारण, परिवार का अशिक्षित वातावरण, लेखन अभ्यास का अभाव है लेखन दक्षता की कमी आदि है प्राथमिक स्तर पर इन त्रुटियों का निराकरण अति आवश्यक है।

छात्र छात्राएं लेखन करते समय पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर नहीं होते है।

1. व्यक्तिगत रूप से छात्र द्वारा लेखन का अभ्यास का अभाव।
2. शिक्षक द्वारा लेखन का अभाव।
3. लिखते समय लापरवाही बरतना।
4. अशिक्षित वातावरण।
5. लेखन संबंधी उपकौशलो का विकसीत न होना।

उपरोक्त कारणों से विद्यार्थियों का लेखन प्रभावित होता है।

अध्ययन के उद्‌देश्य

इस लधु शोध का अध्ययन का उद्‌देश्य मुख्य रूप से कक्षा 3, 4, व 5 के विद्यार्थियों मे हिन्दी लेखन मे होने वाली त्रुटियों का अध्ययन करना है। अपने इस उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित समस्या का चयन किया गया।

''प्राथमिक स्तर पर छात्र छात्राओ की हिन्दी में वर्तनी संबंधी त्रुटियों का अध्ययन''

अक्षरों एवं शब्दों के सही आकार, क्रम एवं उनके बीच की दूरी के सही अन्तर को समझना है।

लिखते समय होने होनेवाली त्रुटियों का अध्ययन करना।

विराम चिन्हों सहित लेखन करना। निर्देशानुसार और विराम चिन्हों का प्रयोग करते हुए अनुच्छेद को लिखना।

शोध चर –

1. स्वतंत्र चर

    लिंग – बालक बालिकाएं

    कक्षा 3,4,5 के छात्र छात्राएं

2. आश्रित चर

    अन्य मातृभाषा

    हिन्दी विषय मे होने वाली त्रुटियां

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वयं बाल भारती पुस्तक मे अलग अलग अनुच्छेद को लिया। ततपश्चात अध्यापकों से अनुच्छेद की जाँच करायी गयी और उसके पश्चात शोध अध्ययन हेतु प्रयुक्त किया गया।

3.4 परिकल्पना

$H0_1$ कक्षा तीन, चार व पाँच मे अध्ययनरत हिन्दी भाषीय तथा अन्य भाषीय विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी लेखन में की गई त्रुटियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

$H0_2$ कक्षा तीन, चार व पाँच मे अध्ययनरत बालक तथा बालिकाओं के द्वारा ''शब्दों के बीच की दूरी'' मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

$H0_3$ कक्षा तीन, चार व पाँच मे अध्ययनरत बालक तथा बालिकाओं के द्वारा हिन्दी लेखन मे ''शब्दों की बनावट'' मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

$H0_4$ कक्षा तीन, चार व पाँच मे अध्ययनरत बालक तथा बालिकाओं के द्वारा हिन्दी लेखन मे ''शब्दों की बनावट'' मे कोई अन्तर नहीं है।

$H0_5$ कक्षा तीन, चार व पाँच मे अध्ययनरत बालक तथा बालिकाओं की हिन्दी लेखन मे वर्तनी संबंधी त्रुटियों मे सार्थक अन्तर नहीं है।

$H0_6$ कक्षा चार मे अध्ययनरत बालक तथा बालिकाओं की हिन्दी लेखन मे वर्तनी संबंधी त्रुटियों मे सार्थक अन्तर नहीं है।

$H0_7$ कक्षा तीन मे अध्ययनरत बालक तथा बालिकाओं की हिन्दी लेखन मे वर्तनी संबंधी त्रुटियों मे सार्थक अन्तर नहीं है।

$H0_8$ कक्षा तीन, चार व पाँच मे अध्ययनरत बालक तथा बालिकाओं की हिन्दी लेखन मे की गई त्रुटियों मात्रात्मक, बिन्दुगत, स्वयंसुधार, शब्दलोप, शब्दप्रतिस्थापन, पुनरूक्ति, शब्दजोड़ना, विराम चिन्ह आदि त्रुटियों मे सार्थक अन्तर नहीं है।

$H0_9$ कक्षा तीन, चार व पाँच मे अध्ययनरत बालक तथा बालिकाओं की हिन्दी लेखन बोध मे सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यायदर्श चयन

न्यायदर्श का चयन सुविधा के अनुसार सोद्देशय विधि से किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यायदर्श विदिशा जिले के गंजबासौदा तहसील स्थित शासकीय विद्यालयों से लिये गये। इस शोध कार्य के अंतर्गत दो विद्यालयों से कुल 120 विद्यार्थियों को चयनित किया गया जिनमें 60 बालक तथा 60 बालिकाएं थी न्यायदर्श का चयन समय अभाव के कारण सीमित रखा है।

शोध सीमाएं

परिसीमन के लिये गंजबासौदा के शायकीय विद्यालय से कक्षा 3 के 40 छात्र छात्राओं तथा कक्षा 4 के 40 छात्र छात्राओं तथा कक्ष 5 के 40 छात्र छात्राओं तक सीमित है। परिसीमन लेखन के उक्त कौशन तक सीमित है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

पदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया। आंकड़ों को विश्लेषित करने के लिए, मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन काई वर्ग एवं टी परीक्षण का उपयोग किया गया है।

निष्कर्ष

शोध द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वर्तमान अध्ययन मे शून्य परिकल्पनाओं का निमार्ण किया गया, जिसके आधार पर प्रदत्तों का विश्लेषण करके उनकी व्याख्या की गई परिकल्पनाओं के आधार पर जो निष्कर्ष आये उनका विवरण निम्न अनुसार है।

इस लघु शोध अध्ययन के कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष निम्नलिखित हैं।

1. कक्षा तीन, चार व पांच में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं में परीक्षण द्वारा यह पाया गया कि लापरवाही, जल्दबाजी तथा लेखन न करने की आदत के कारण लेखन में कठिनाई अनुभव की गई।
2. मात्रात्मक तथा बिन्दुगत की त्रुटियों की अशुद्धियां अधिक थी तथा सभी प्रकार की त्रुटियां विद्यार्थियों ने लगभग की। असावधानी के कारण त्रुटियां पायी गई।

3. मातृभाषा तथा अन्य भाषा के कारण भी बालक–बालिकाओं की लेखन में त्रुटियां पाई गई।

सुझाव

1. प्रस्तुत शोध विस्तृत प्रतिदर्श पर किया जाए, जिसमें परिकल्पनाओं का परीक्षण और अधिक स्पष्ट हो सके।
2. इस प्रकार के शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र छात्राओं में भी होने चाहिए।
3. प्रारंभ से ही विद्यार्थियों में लेखन की योग्यता के विकास हेतु प्रयत्न करना चाहिए।
4. प्राथमिक कक्षाओं में भाषा संबंधी कठिनाइयों को दूर करने के लिए विद्यार्थियों में लेखन के विभिन्न उप कौशलो में उनकी प्रस्तुति के आधार पर उनकी दुर्बलताओं को समझना चाहिए।
5. प्रस्तुत शोध शासकीय तथा अशासकीय विद्यालय के छात्र छात्राओ पर किया जा सकता है।
6. इसी प्रकार का शोध अन्य भाषाओ मे भी किया जाना चाहिए।

शैक्षिक उपयोग

1. प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों में सीखने की तीव्रता होती है। अतः वह लेखन में रूचि लेते हैं। इसलिए इस स्तर पर लेखन पर ध्यान देना चाहिए।
2. बच्चे भाषा की जटिल संरचना को सहज रूप में सीखते हैं इसलिए इस दृष्टि से उनका मूल्यांकन उनकी अवस्था के अनुरूप होना चाहिए।
3. भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। इसलिए विद्यार्थियों की भाषा में दक्षता का प्रभाव उनके अन्य विषयों पर भी पड़ता है। अतः भाषा के अध्यापन पर ही बालकों की सफलता पर निर्भर है।
4. अशिक्षित परिवार के बालकों की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए क्योंकि इन परिवारों में भी प्रतिभाएं जन्म लेती हैं। अर्धिक व सामाजिक रूप से पिछड़े हुए परिवारों के बच्चों में भी सृजन की अनेक संभावनाएं है। अतः ऐसी परिस्थितियों में बालकों में लेखन कौशल के विकास हेतु सहदयता एवं धैर्य व निष्ठा से कार्य करने की आवश्यकता है।
5. अशिक्षित वातावरण व परिवेश वाले परिवारों में लेखन के महत्व का ज्ञान कम होने के कारण वह अपने बच्चों को लेखन के प्रति प्रेरित नहीं कर पाते। अतः इस स्थिति में शैक्षिक सन्तुलन के लिए बच्चों के माता–पिता को जानकारी देना चाहिए तथा इस प्रकार ध्यान देना चाहिए कि उन बालकों की प्रतिभा पर अशिक्षित वातावरण का प्रभाव कम से कम हो सके। क्यों कि ऐसे माता–पिता के बच्चे विद्यालय पर ही निर्भर होते हैं।

6. लेखन एक ऐसा उपकरण का साधन है। जिससे सम्पूर्ण मानवता में बन्धुत्व के भाव विकसित किए जा सकते हैं। अतः भाषा शिक्षण में लेखन की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

7. एक परिवार में बच्चों को माता–पिता के द्वारा ही भाषा की शिक्षा मिलती है। अतः बालकों में भाषा संबंधी कठिनाईयों को दूर करने के लिए माताओं का सहयोग लेना आवश्यक है।

8. शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भाषा सशक्त भूमिका निभा सकती है। अतः बालकों में लेखन कौशल का विकास अनिवार्य दायित्व माना जाना चाहिए।